गीता की विषय-वस्तु

गीता सार्वभौम सत्य के सिद्धान्त को प्रतिपादित करती है. इसका संदेश सार्वभौम, गंभीर और किसी भी वाद से परे है, जबकि यह सनातन धर्म के त्रिदेव सिंद्धान्त को भी प्रतिपादित करती है, जिसे संक्षेप में हम हिन्दुत्व भी कह सकते हैं. गीता को समझना सरल है, यदि हम इसे मुक्त हृदय से और परिपक्व मस्तिष्क से इसे अपनाऐं. पूर्ण विश्वास और श्रद्धा के सहित इसे बार-बार पढ़ने से इसके निहित गूढ़ भाव भी समझ आने लगते हैं.

गीता एक अत्यंत पवित्र ग्रंथ है, जिसमें आध्यात्म के गूढ़तम विषयों को लिया गया है. यह आत्मज्ञान देती है, और हमें यह बताती है, कि हम कौन है और किस प्रकार हम एक आनन्दमय जीवन इस द्वैतवादी-विश्‍व में बिता सकते हैं. यह योग शास्त्र का एक आत्यधिक महत्त्वपूर्ण ग्रंथ है1, जिस पर चल कर हम अपनी चारित्रिक और आध्यात्मिक उन्नति कर सकते हैं. महात्मा गांधी ने गीता को सम्पूर्ण वैदिक शिक्षाओं के तत्त्वों का सार बताया है, जिसका ज्ञान सारी मानवीय महत्त्वाकांक्षाओं को सिद्ध करने वाला है. प्रसिद्ध जर्मन भाष्यकार और सस्कृत के विद्वान जे.डब्लयू.होअर ने गीता को एक अनश्‍वर महत्त्व का ग्रन्थ बताया है, जो न केवल गम्भीर अर्न्तदृष्टि प्रदान करती है, बल्कि सब कालों में और सब प्रकार के धार्मिक जीवन के लिये प्रामाणिक है. डाक्टर सर्वेपल्ली राधाकृष्णन् ने अपनी टीका में गीता को अधिविद्या और नीतिशास्त्र, ब्रह्मविद्या और योगशास्त्र, ब्रह्मविज्ञान और ब्रह्म के साथ संयोग की कला, दोनों बताया है. आनन्दगिरि ने शंकराचार्य की गीता की टीका पर अपनी टीका में कहा है, कि न तो अकेला ज्ञान और न ही अकेला कर्म आध्यात्मिक मुक्ति तक ले जा सकता है. इन दोनों के सम्मिलित अभ्यास से अवश्‍य हम उस लक्ष्य तक पहुंच सकते हैं. स्वामी प्रणवानन्द ने अपनी टीका में गीता के आध्यात्मिक पक्ष को बहुत सुन्दरता से उजागर किया है.
उनकी टीका में महाभारत के अधिकतर महत्त्वपूर्ण पात्रों के नामों का आध्यात्मिक अर्थ भी दिया है, जोकि हमें एक नये ढंग से सोचने पर बाध्य करता है.

हम जानते हैं कि गीता, महात्मा अर्जुन के उनके कर्त्तव्य से विमुख होने पर, भगवान् श्री कृष्ण द्वारा कही गयी. पाण्डव कदापि युद्ध नहीं चाहते थे, क्योंकि युद्ध का मतलब है अनावश्‍यक रक्तपात और भयंकर विनाश. हम यह भी जानते हैं कि अहिंसा हिन्दुत्व का एक प्राथमिक सिद्धांत है. हिन्दु लोग प्रत्येक प्राणी, मनुष्य और पशु,को पूज्य मानते हैं. गीता का दिव्य संवाद किसी मन्दिर, किसी निर्जन वन, या किसी पर्वत की चोटी पर नहीं, अपितु युद्ध के मैदान में ठीक युद्ध भेरी बजने से पहले हुआ था. यह संवाद महाभारत नाम के महाकाव्य में लिपिबद्ध है. गीता के संदेश के द्वारा भगवान् श्री कृष्ण महात्मा अर्जुन को युद्ध के लिये उद्यत करते हैं. यहाँ हम हिन्दुओं के अहिंसा के सिद्धांत का विरोधाभास पाते हैं, परन्तु महाभारत के युद्ध के परिपेक्ष्य में इस अवसर पर युद्ध से विमुख होना कायरता पूर्ण और धर्मविमुख कार्य होता. गीता में यही संदेश है कि अवसर के अनुसार धर्म-पूर्ण कार्य करना ही किसी का भी न्यायोचित धर्म है और कर्त्तव्य भी.

यदि गौर से देखा जाये तो अर्जुन का असमंजस हम सब का असमंजस है. प्राणी अपनी रोजाना की जिन्दगी में ऐसी स्थितियों से जूझते हैं. हाँ अर्जुन की दुविधा महाविकट थी. उसे तय करना था कि वह अपने सगे सम्बन्धियों को मार डाले या युद्ध क्षेत्र से भाग जाये. गीता के सात सौ श्‍लोकों में भक्त और भगवान् यही तय करते हैं कि हमारा कर्त्तव्य क्या है, खास तौर से ऐसी विषम परिस्थितियों में. गीता का यह संवाद महाराज धृतराष्ट्र् को उनके सारथी दिव्य दृष्टि प्राप्त संजय ने सुनाया. महाभारत, पुराणों आदि के रचयिता सवर्ज्ञ व्यासदेव ने गीता को लिपिबद्ध करके मानवजाति का महान् उपकार किया है. स्वामी प्रणवानन्द ने अपनी टीका में कहा है कि “गीता योगी के लिये योगशास्त्र, दार्शनिक के लिये दर्शन, ज्योतिर्विद के लिये ज्योतिष, वैज्ञानिक के लिये विज्ञान, नैतिकशास्त्री के लिये नीति और साधु के लिये सदाचार है.”

गीता के अठारह अध्यायों को हम छह-छह अध्यायों के तीन प्रमुख भागों में भी विभक्त कर सकते हैं. गीता के प्रथम ६ अध्यायों में ईश्‍वर ने यह व्याख्या की है, कि किन परिस्थितियों में जीव उन्हें समझ सकता है. अध्याय ७ से १२ तक के ६ अध्यायों में भगवान् हमें उनके साथ जीवात्मा के संबध एवं भक्ति के प्रसंग में अपने दिव्य स्वरूप का वर्णन करेंगे. हमें ज्ञात होगा कि ईश्‍वर किस प्रकार श्रेष्ठ हैं व जीव कैसे उनके आधीन हैं और अपनी विस्मृति के कारण

कष्टप्रद स्थिति में हैं. जब पुण्यकर्मों द्वारा जीव को अपनी स्थिति के विषय में ज्ञान का प्रकाश मिलता है, तो किस प्रकार जीव आर्त, दरिद्र, जिज्ञासु या ज्ञान पिपासु के रूप में उन्हें प्राप्त करने का प्रयत्न करता है, इसका ज्ञान हमें इन बीच के ६ अध्यायों में मिलेगा. अन्तिम छह अध्यायों में जीवात्मा व प्रकृति के सम्पर्क व कर्म-ज्ञान और विभिन्न प्रकार की भक्ति के द्वारा जीवात्मा के परमात्मा द्वारा उद्धार की भगवान् श्री कृष्ण द्वारा व्याख्या की गई है. यह शरीर रूपी खेत ही वह क्षेत्र है, जिसमें हम कर्म रूपी खेती करके क्षेत्रज्ञ कहलाते हैं और रोपे गऐ कर्म रूपी बीजों के अनुसार कर्म-फल पाते हैं. इस बीजमंत्र को जानने वाला क्षेत्रज्ञ कहलाता है.

हमारा शरीर ही कुरूक्षेत्र है. कुरू शब्द संस्कृत धातु 'क्रि' से निकला है, जिसका अर्थ है क्रिया. यह क्रिया-क्षेत्र या कुरूक्षेत्र हमारा शरीर है, जिसमें ज्ञान और अज्ञान का अनवरत युद्ध चलता रहता है. यह क्षेत्र तीन गुणों, अर्थात सत्त्व, राजस और तामस गुणों में बँटा हुआ है. पहला क्षेत्र हमारे शरीर की बाहरी सीमा है, जिसमें पाँच ज्ञानेन्द्रियाँ और पाँच कर्मेन्द्रियाँ आती हैं. इसी क्षेत्र में अन्य दोनों गुण भी निवास करते हैं. हमारा भौतिक शरीर पाँच तत्वों, पृथ्वी, जल, अग्नि, आकाश और वायु पर तामस गुणों का प्रभाव है. रजोगुण हमारी क्रिया शक्ति के रूप में उभर कर आता है. कुरूक्षेत्र का दूसरा भाग हमारे छहों चक्र, मानस और बुद्धि हैं. कुरुक्षेत्र का अन्तिम भाग हमारा मस्तिष्क है. सहस्त्रधार चक्र में स्थित यह धर्मक्षेत्र कहलाता है. यहीं आत्मा का निवास भी है. इस प्रकार कुरूक्षेत्र का युद्ध हमारे शरीर के तीनों भागों की मानसिक, आत्मिक और आध्यात्मिक लडाई है. प्रत्येक मनुष्य को यह युद्ध करना पडता है, जिसे हम गुरू की सहायता से जीत सकते हैं. सदा जीतने वाले संजय से प्रार्थना करो कि वह अंधे मन, धृतराष्ट्र को समझाये कि क्या और कैसे होना है.

छान्दोग्योपनिषद् का महावाक्य है - "तत्त्वमसि", अर्थात तुम वह हो. इस वाक्य के "तुम" यानी जीव के कर्म मार्ग का निरूपण गीता के पहले छह अध्यायों में है. बीच के छह अध्याय "वह" यानी ब्रह्म की व्याख्या करते हुऐ भक्ति मार्ग की व्याख्या करते हैं. अन्तिम छह अध्याय ज्ञानमार्ग की उत्कृष्टता बताते हुऐ,"हो" अर्थात "जीव ही ब्रह्म है" इसका विशद निरुपण करते हैं.

1 स्वामी प्रणवानन्द कृत गीता पर भाष्य देखिए. वर्ष १९६२. यह ग्रन्थ इस प्रयास का मुख्य आधार है. इसे आप योगोदा सत्संग सोसायटी के नई दिल्ली स्थित कार्यालय से प्राप्त कर सकते हैं.